National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 2; May 2017; Page No. 197-201

पं॰ जवाहरलाल नेहरु एवं जयप्रकाश नारायण के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

दिशा बृजवासी

पीएच॰डी॰, (शिक्षा शास्त्र), श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

आधुनिक युग में शिक्षा तथा दर्शन, जीवन और समाज से पूर्ण रूप से सम्बन्धित है। समाज की राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और नैतिक सभी बातों का प्रभाव जीवन पर पड़ता है। अतएव मनुष्य इस प्रकार की संस्थाओं, आदर्शो एवं दृष्टिकोणों का निर्माण करता है जो समाज के संचालन और प्रगति में सहायक हो। इस कार्य में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा दर्शन इस सम्बन्ध में मानव का पथ प्रदर्शन करता है। शिक्षा दर्शन उन आदर्शो और मूल्यों को प्रस्तुत करता है जिनका अनुसरण करके व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र के जीवन को ऊँचा उठा सकते हैं। आज शिक्षा में सैद्धान्तिक पक्ष की अपेक्षा व्यवहारिक पक्ष पर अधिक बल दिया जा रहा हैं परन्तु यह नहीं भूलना चाहिये कि कोई क्रिया किन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर ही की जाती है। यदि सिद्धान्त न हो तो कार्य भी न हो। फलतः शिक्षा के महत्व के साथ ही शिक्षा दर्शन के महत्व का बढ़ना भी स्वाभाविक है। जैसे–जैसे शिक्षा की आवश्यकता का अनुभव किया जाता है, वैसे–वैसे शिक्षा दर्शन की आवश्यकता बढ़ती जाती है, क्योंकि शिक्षा की व्यवस्था के व्यवहारिक पक्ष का प्रेरणा स्रोत शिक्षा दर्शन ही है।

आज शिक्षा के अर्थ में व्यापक परिवर्तन हुआ है। आज पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन करना या थोड़ा सा ज्ञान प्राप्त करना ही शिक्षा नहीं है, वरन् शिक्षा को जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया गया। शिक्षा की इस धारणा के फलस्वरूप भी शिक्षा दर्शन के अध्ययन की आवश्यकता अनुभव की गयी है। शिक्षा दर्शन से इस बात का ज्ञान होता है कि शिक्षा का वास्तविक रूप क्या हो? विभिन्न युगों में शिक्षा का रूप क्या था? किस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर परिवर्तन हुए हैं? आधुनिक शिक्षा की व्यवस्था किस प्रकार की गयी है? इस व्यवस्था में किन–किन विद्वानों ने योगदान दिया है, आदि विषयों पर शिक्षा दर्शन में विचार किया जाता है।

प्रत्येक शिक्षक की यह इच्छा होती है कि वह अपने कार्य में सफलता प्राप्त करें। कार्य में सफलता, कार्य के स्वरूप में निर्भर करती है। शिक्षक अपने कार्य में तभी सफल होता है जब वह शिक्षण के स्वरूप को अच्छी तरह से पहचाने। शिक्षण का स्वरूप शिक्षा दर्शन निश्चित करता है, इसलिए शिक्षक के लिए शिक्षा के ज्ञान की आवश्यकता है। एक अच्छा शिक्षक अपनी शिक्षण विधि में परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन करता रहता है। कोई भी पद्धति सभी परिस्थितियों में उपयुक्त नहीं हो सकती है। यदि ऐसा होता तो विभिन्न शिक्षण विधियों का निर्माण न होता। शिक्षण विधियों में परिवर्तन लाने में दर्शन का महत्वपूर्ण योगदान है। दर्शन से यदि शिक्षक परिचित है तो वह अपनी शिक्षण विधि में अभीष्ट परिवर्तन करने में सक्षम होता है।

समय के प्रवाह के साथ–साथ शिक्षा में कुछ दोष आ जाते है। शिक्षा में जब दोष आ जाते है तो शिक्षा सुधार की बात चल पड़ती है। शिक्षा में सुधार करना समय–समय पर आवश्यक हो जाता है। शिक्षक को वर्तमान शिक्षा के गुण–दोषों से परिचित होना और शिक्षा सुधार के लिए स्वस्थ दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। गुण–दोष का विवेचन करना और शिक्षक में स्वस्थ दृष्टिकोण का निर्माण करना शिक्षा दर्शन का कार्य है, अतः शिक्षक के लिए इसका ज्ञान आवश्यक है।

सामान्यतः प्रत्येक शिक्षक किसी विषय का अध्ययन करता है और उस विशिष्ट विषय का शिक्षक कहलाने में गर्व का अनुभव करता है। यह गर्व की अपेक्षा चिन्ता का विषय है। शिक्षक को जीवन का शिक्षक होना चाहिए न कि किसी विषय का। किसी विषय का ज्ञाता यदि जीवन की समस्याओं से अपरिचित है तो वह विषय का सच्चा ज्ञाता नही कहा जा सकता, शिक्षक तो दूर की बात है। शिक्षक का शिक्षत्व इसी में है कि वह बालक के सम्पूर्ण जीवन के रहस्यों से परिचित हो और जीवन के सन्दर्भ में अपने विषय को सम्पूर्ण ज्ञान की एक शाखा के रूप में ही पढाये। तभी वह सफल शिक्षक हो सकता है, अन्यथा नही। जीवन के रहस्यों एवं अनुभव का एकता से परिचय शिक्षा दर्शन के अध्ययन से प्राप्त होता है। इसीलिए ही हरबर्ट स्पेन्सर ने कहा है कि सच्चा दार्शनिक ही सच्ची शिक्षा को व्यवहारिक बना सकता है।

शिक्षा दर्शन सामान्यतः ज्ञान के विभिन्न विषयों में विशेषतः शिक्षा की विभिन्न शाखाओं में समन्वय स्थापित करता है। यदि इस समन्वय की ओर ध्यान न दिया जाये तो शिक्षक का कार्य प्रभावहीन हो जाता है। इसीलिए रस्क ने कहा है कि जो शिक्षक दर्शन की उपेक्षा करते है, उन्हें अपने कार्य को प्रभावहीन बना डालने के रूप में इस उपेक्षा का दण्ड भुगतना पड़ता है।

ब्रूबेकर के अनुसार शिक्षा दर्शन के तीन कार्य है। प्रथम रूप में शिक्षा दर्शन चिन्तनात्मक है। इस रूप में यह सत्य का एक विहंगम दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जिसे शिक्षा व्यवसाय में प्रयोग करने से ऐसी दिशा और विधियां प्राप्त होती है। जिनका सम्भवतः अभाव होगा। दूसरा कार्य आदर्श माना जाता है तथा तीसरा कार्य समीक्षा प्रधान है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत के नेताओं ने आर्थिक विकास तथा अन्य क्षेत्रों के विकास की योजनाएं बनायी। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रयत्न किये गये, परन्तु शिक्षा नीति एकांगी एवं अनेक समस्याओं का केन्द्र बिन्दु बनी रही। पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली का उस पर प्रभाव बना रहा और आधुनिक शिक्षा नीति भारतवासियों के लिए परम घातक सिद्ध हो रही है। बेरोजगारी की वृद्धि, भ्रष्टाचार, परीक्षाओं में नकल करने की आदत, शिक्षा एवं शिक्षक के प्रति छात्रों की उपेक्षा आचार–विचार को तिलांजलि देकर येन केन प्रकारेण सफल होने की वृत्ति आदि कुरीतियां सभी आधुनिक शिक्षा की देन हैं।

नवयुवकों के हृदय से सच्चाई, संयम, शिष्टाचार आदि का भाव समाप्त हो गया है जो नैतिकता और चरित्र संगठन भारतीय समाज का प्राण था उसकी उपेक्षा की गई है स्पष्ट रूप से कहा जाये तो आधुनिक शिक्षा मानव का सर्वांगीण विकास करने में असफल सिद्ध हुई है।

आज शिक्षा राजनीतिज्ञों के हाथों में खेल रही है एवं उसका कोई नैतिक मापदंड नहीं रह गया है। जिस प्रकार प्राण न रहने पर शरीर सड़ने लगता है उसी प्रकार आज शिक्षा अपना कोई बौद्धिक मूल्य न होने के कारण सड़ रही है, यदि प्रजातंत्र में शिक्षा को राजनीति के कोढ़ से बचाना है और शिक्षा का प्रयोग देश के नवयुवकों के निर्माण के लिए करना है तो हमें शिक्षा का स्वरूप शिक्षा की ही तरह रखना होगा तथा उसे स्वरूप देना होगा।

शिक्षा किसी भी समाज की आधारशिला होती है। प्रत्येक राष्ट्र की उन्नति उसकी शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करती है। जिस राष्ट्र में जैसी शिक्षा व्यवस्था होगी वैसे ही वह राष्ट्र तथा उसके नागरिक होंगे। सौभाग्यवश भारतीय ऋषियों, समाज सुधारकों ने समय समय पर अपने देश की शिक्षा के लिए बहुत कुछ किया, परन्तु यह निर्विवाद तथ्य है कि भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली अंग्रेजों द्वारा आरोपित एक विदेशी प्रणाली है। यूरोप के व्यापारियों के साथ–साथ अनेक इसाई पादरी भी भारत आये। अपने धर्म प्रचार हेतु उन्हें शिक्षा का सहारा लेना पड़ा।" उन्होने जगह–जगह मिशन स्कूलों की स्थापना की, जिनमें भारतीय भाषाओं के द्वारा इसाई धर्म की शिक्षा दी जाती थी। मैकाले के द्वारा भारतीय शिक्षा का विदेशीकरण किया गया और सरकारी नौकरियां मात्र उन हिन्दुओं को मिलती थी जिन्होने इसाई धर्म अपना लिया हो। इनके द्वारा बडे स्तर पर भारतीयों का ईसाईकरण किया गया तथा भारतीय शिक्षा प्रणाली को उन्मूलित कर विदेशी शिक्षा प्रणाली को अपनाया गया। यही प्रणाली स्वतन्त्र भारत में अभी तक प्रचलित है। आज इस बात की आवश्यकता है कि यदि हम वास्तविक अर्थो में भारतीय नागरिक चाहते है तो प्रचलित शिक्षा प्रणाली का संरक्षण करके उनका उन्मूलन करना होगा। तथा उसके स्थान पर एक ऐसी शिक्षा प्रणाली को विकसित करना होगा जिसका आधार भारतीय संस्कृति हो।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने महान चिन्तक पं॰ जवाहरलाल नेहरू एवं जयप्रकाश नारायण के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है जिससे वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इस प्रकार का परिवर्तन किया जा सके कि वह देश में समाजसेवी, विनयशील संयमी व दृढ निश्चयी नागरिकों का निमार्ण कर सके। जय प्रकाश नारायण और पं॰ जवाहर लाल नेहरू जैसे महान विचारकों के विचार निश्चित रूप से उपयोगी सिद्ध होंगे। ऐसा मेरा पूर्ण (दृढ़) विश्वास है। उत्तम शिक्षा द्वारा ही राष्ट्र की उन्नति सम्भव है। यदि हमारे देश में उचित शिक्षा व्यवस्था होगी तो भावी राष्ट्र का चरित्र भी उज्ज्वल होगा।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

1. **अब्बासी (1980):** अब्बासी, ए॰एन॰एम॰एस॰ के शोध प्रबन्ध ''द एजुकेशनल थॉट्स ऑफ जवाहर लाल नेहरू'' का निष्कर्ष इस प्रकार रहा कि बालक के जीवन के विकास में सामाजिक दृष्टिकोण अति महत्वपूर्ण है। शिक्षा मनुष्य में सूझ–बूझ उत्पन्न करने वाली हो, आत्म नियन्त्रण सिखाती हो, आर्थिक तथा कृषि विषयों का ज्ञान कराती है।
2. **बाजपेयी, जयकरण नाथ (1982):** "एजुकेशनल फिलॉसफी ऑफ जवाहर लाल नेहरू" में अनुसंधानकर्त्ता ने जवाहर लाल नेहरू के शैक्षिक दर्शन की पृष्ठभूमि में शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यवस्तु, शिक्षण–विधि, अनुशासन, स्त्री शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, अध्यापक का स्थान, राज्य का शिक्षा के क्षेत्र में उत्तरदायित्व आदि की विस्तृत चर्चा की है। अध्ययन में नेहरू के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की पूर्वाग्रह मुक्त तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समीक्षा की गई है। जवाहर लाल नेहरू ने दर्शन एवं शिक्षा की पारस्परिक निर्भरता को स्वीकार किया। उनके अनुसार दर्शन शिक्षा को अनेक आधार प्रदान करती है। आचार्य नरेन्द्र देव के समान नेहरू ने शिक्षा के शास्वत व अपरिवर्तनीय उद्देश्यों का निर्धारण कुछ मान्य दार्शनकि सिद्धान्तों के साथ–साथ व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं, मूल्यों पर आधारित होना चाहिये।
3. **धर, पी॰ (1990):** ने अपने शोध प्रबन्ध "रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं महर्षि अरविन्द के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन" में गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं महर्षि अरविन्द के शिक्षा दर्शन के विभिन्न पक्षों– शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, अनुशासन एवं स्वतंत्रता, छात्र–शिक्षक सम्बन्ध आदि का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस शोध कार्य का निष्कर्ष यह है कि इन दोनों शिक्षाविदों के विचारों, विशेषतः मातृभाषा द्वारा शिक्षा, अन्तर्राष्ट्रीय भ्रातृत्व, मनोवैज्ञानिक शिक्षक विधियों और बालक के बहुमुखी विकास का आज की परिस्थितियों में विशेष महत्व है।
4. **एच॰शंकर (1991):** ने अपने शोध प्रबन्ध "महर्षि अरविन्द एवं रूसों के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन" में महर्षि अरविन्द एवं रूसों के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया। यह शोध प्रबन्ध इन शिक्षाविदों से सम्बन्धित साहित्य के विश्लेषण पर आधारित है। महर्षि अरविन्द के अनुसार बालक की प्रच्छन्न शक्ति के बाहर निकालना ही शिक्षा है। "स्व" सार्वभौम तथा राष्ट्र में एकता स्थापित करना शिक्षा का कार्य है। इनकी शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को सम्पूर्णता प्रदान करना तथा दैवीय प्राणी तैयार करना है।
5. **भारती, डी॰ विजया (1999):** ने "ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ द एजुकेशनल फिलॉसफी ऑफ स्वामी विवेकानन्द एण्ड जॉन डीवी" के निष्कर्ष में शिक्षा के माध्यम से दोनों ने मानव सेवा का कार्य किया है। स्वामी विवेकानन्द ने अन्तर्निहित तथा चारित्रिक शिक्षा पर अत्यधिक जोर दिया है तथा जॉन डीवी ने शिक्षा का उद्देश्य बालक की रूचि के अनुसार सम्यक विकास है। जॉन डीवी ने करके सीखने पर बल दिया। डीवी के दर्शन ने प्राचीन विचारों के विरूद्ध नवीन विचारों का प्रतिपादन किया। डीवी ने कुछ मूल्यों को मानकर आदर्शवादियों के निकट भी पाया गया। डीवी ने समाज और स्कूल का अभिन्न सम्बन्ध बताकर, बालक की अभिरूचि तथा प्रयोगों द्वारा सत्य का निर्धारण करके डीवी ने आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है।
6. **रस्तोगी, श्रीमती विनीता (2000):** "पं॰ जवाहर लाल नेहरू के शैक्षिक विचारों का वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में औचित्य" में अध्ययन के निम्न उद्देश्य थे– 1. पं॰ जवाहर लाल नेहरू के शैक्षिक विचार, जीवन दर्शन एवं शिक्षा दर्शन का अध्ययन करना। 2. पं॰ जवाहर लाल नेहरू के शिक्षा सम्बन्धी विचारों जैसे शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण–विधि, अनुशासन आदि विषय में अध्ययन करना। 3. शिक्षा के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना। 4. नई शिक्षा नीति 1986 के सन्दर्भ में उनके विचारों का अध्ययन करना। 5. पं॰ जवाहर लाल नेहरू के शैक्षिक विचारों का मूल्यांकन तथा वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में उनके औचित्य का अध्ययन करना।
7. **सिंह, नवनीत कुमार (2009):** ने "भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समाजवादी चिन्तकों का शिक्षा में योगदान और उसकी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता" नामक शीर्षक से अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। प्रबंध में उन्होंने पं॰ नेहरू, आचार्य नरेन्द्र देव, डॉ॰ सम्पूर्णानन्द तथा राम मनोहर लोहिया के शिक्षा दर्शनों का अध्ययन किया तथा अपने विचार व्यक्त किये।
8. **शर्मा, श्रीमती वीना (2009):** ने अपने शोधग्रंथ "पं॰ मदनमोहन मालवीय एवं महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" में मालवीय जी तथा गाँधीजी के शिक्षा दर्शनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया तथा शिक्षा के उद्देश्यों, महत्व और प्रकृति के बारे में विचार व्यक्त किये।
9. **दीप, आकाश (2012):** ने अपने शोध अध्ययन "जे॰ कृष्णमूर्ति एवं रजनीश के शैक्षिक विचारों का अध्ययन" में जे॰ कृष्णमूर्ति एवं रजनीश के शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया तथा उनके विचारों का विश्लेषण कर उनकी प्रासंगिकता को जानने का प्रयास किया।
10. **कुमार, अरविन्द (2013):** ने अपने शोध ग्रन्थ "विवेकानन्द एवं अरविन्द घोष के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन" में स्वामी

विवेकानन्द एवं अरविन्द घोष के शैक्षिक विचारों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया तथा दोनों के शैक्षिक विचारों में समानताओं एवं असमानताओं को बताते हुए वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में विवेकानन्द एवं अरविन्द घोष के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता जानने का प्रयत्न किया।

11. **कुमार, दीपक (2014):** "अरविन्द घोष के विचारों का समालोचनात्मक अध्ययन" ने अपने अध्ययन में अरविन्द घोष के विचारों का विश्लेषण किया तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनके विचारों की प्रासंगिकता को जानने का प्रयास किया।

अध्ययन के उद्देश्य

- शिक्षा का अर्थ एवं उद्देश्यों पर पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्री जय प्रकाश नारायण के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन करना।
- पंडित जवाहर लाल नेहरू व श्री जय प्रकाश नारायण के जीवन व कार्यों तथा शैक्षिक विचारों को प्रकाश में लाना।
- पंडित जवाहर लाल नेहरू व श्री जय प्रकाश नारायण के पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों का अध्ययन करना।
- अनुशासन एवं स्त्री शिक्षा के सन्दर्भ में पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्री जय प्रकाश नारायण के विचारों को प्रकाश में लाना।
- पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्री जय प्रकाश नारायण के शिक्षक के सम्बन्ध में विचारों का अध्ययन करना।
- पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्री जय प्रकाश नारायण द्वारा निरूपित गुरू–शिष्य सम्बन्ध के स्वरूप का अध्ययन करना।
- पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्री जय प्रकाश नारायण के शैक्षिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

अध्ययन की अवधारणायें

- पंडित जवाहर लाल नेहरू व श्री जय प्रकाश नारायण के शैक्षिक विचार वर्तमान भारतीय शैक्षिक प्रणाली में महत्व रखते हैं।
- पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्री जय प्रकाश नारायण का व्यक्तित्व बाल एवं युवा वर्ग के चारित्रिक एवं नैतिक विकास में प्रभावी है।
- पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्री जय प्रकाश नारायण द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्य वर्तमान शैक्षिक प्रणाली के विकास में महत्व रखते हैं।
- पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्री जय प्रकाश नारायण द्वारा वर्णित शिक्षण विधियाँ वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिक है।
- पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्री जय प्रकाश नारायण द्वारा वर्णित पाठ्क्रम प्राथमिक, इण्टरमीडिएट एवं उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम को अधिक प्रभावी एवं व्यवसाय परक बनाने में प्रभावी है।
- पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्री जय प्रकाश नारायण द्वारा निरूपित गुरु–शिष्य सम्बन्ध आधुनिक भारतीय समाज के विकास में सहायक है।
- पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्री जय प्रकाश नारायण द्वारा वर्णित शिक्षा वर्तमान भारतीय शिक्षा के विकास में सहायक है।

अध्ययन में सम्मिलित व्यक्तित्व

पं॰ जवाहरलाल नेहरु

पंडित नेहरू जी एक महान चिन्तक, राजनीतिज्ञ तथा नवचेतना के मूर्तिमान युगपुरुष थे। पंडित नेहरू जी भारतीय इतिहास की उन गिनी चुनी महान विभूतियों में से हैं जो राष्ट्र को एक नवीन दिशा की ओर ले जाते हैं। पंडित नेहरू जी ऐसे चिन्तक थे जिन्होंने ऐसे आधारभूत सिद्धान्त प्रस्तुत किये जिनमें मानव जाति के परम लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। उन्होंने मानव जीवन के अनेकों आदर्शों एवं पहलुओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा के विभिन्न उद्देश्य बताये। पंडित नेहरू जी ने शिक्षा पद्धति के माध्यम से आत्म–सम्मान एवं स्वावलम्बन का पाठ पढ़ाया।

पंडित नेहरू ने राष्ट्रीय एकता की शिक्षा पर बल दिया। उन्होने राष्ट्रीय एकता के हित के लिये अपनी आवाज बुलन्द करते हुए अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में भाषण देते हुए कहा कि– "हमें अपने देश की नवजात स्वतन्त्रता को सबल बनाना और उसको सुरक्षित रखना, अपना सर्वप्रथम कर्तव्य समझना चाहिये। यदि हम अपने समूह, अपने राज्य, अपनी भाषा या अपनी जाति के समान किसी अन्य बात को जन्म देंगे तो राष्ट्र के रूप में हमारा अन्त आवश्यक है।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि देश को सुदृढ़ बनाने के लिए हमें राष्ट्रीय एकता की शिक्षा देनी होगी तभी हम अपने मतभेदों को भुला सकेंगे। पृथकतावाद की भावनायें समाप्त करनी होंगी, तथा सभी समस्यायें मिलजुल कर हल करनी होगी। इन सब बातों को पूरा करने के लिए नेहरू राष्ट्रीय एकता की शिक्षा पर बल देते थे।

जयप्रकाश नारायण जी

हमारे देश में समय–2 पर अनेकों महापुरुषों ने इस भूमि पर जन्म लिया है। उन्हीं में जयप्रकाश नारायण जी का नाम भी सूर्य की भांति चमकता है। मदनमोहन मालवीय जी बीसवीं शताब्दी के एक महान समाजवादी चिन्तक, राजनीतिज्ञ, के साथ–2 महान शिक्षाशास्त्री भी थे।

जय प्रकाश नारायण के अनुसार मानवता का केन्द्रीय समस्याएं थी– धन, सम्पत्ति, वर्ग, संस्कृति और अवसरों की असमानता ने उनके मन को अशान्त कर दिया था, वह बहुत दुखी थे। वह समझते थे कि असमानता का कारण है प्रकृति की देन पर व्यक्तिगत स्वामित्व। शोषण भी इसी वजह से होता है, ऐसा वह मानते थे। उन्होंने अमेरिका, भारत दोनों में ज्यादातर आदमियों को गरीबी, भूख, गन्दगी, बीमारी और अज्ञान का शिकार पाया।

उनका विचार था कि अन्य देशों की अपेक्षा में भारत में अमीरी, गरीबी, निरंकुशता व विपन्नता के बीच खाई अधिक चौड़ी है। लेकिन इसमें दोष वह भारत के प्रचीन इतिहास का नहीं मानते थे।

जय प्रकाश नारायण मानते थे कि असमानता की समस्या का सोशिलिस्ट समाधान यह है कि उत्पादन के साधनों की निजी मिल्कियत समाप्त कर दी जाये और सारा समाज उनका स्वामी बन जाये।

समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत अध्ययन में पंडित नेहरू एवं जय प्रकाश नारायण की रचनाओं का मुख्यतया उपयोग किया गया हे तथा उनके विचारों पर भी समय–समय पर महत्वपूर्ण शोधन हुआ है, उनका भी स्थान–स्थान पर उपयोग किया गया है। पंडित नेहरू तथा जय प्रकाश नारायण अपने युग के महान राजनीतिक चिन्तक रहे हैं।

प्रस्तुत शोध में पंडित नेहरू एवं जय प्रकाश नारायण के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का तुलनात्मक अध्ययन एवं वर्तमान समय में प्रासंगिकता को प्रस्तुत करने को प्रयास किया जायेगा। यह शोध अध्ययन पंडित नेहरू एवं जय प्रकाश नारायण द्वारा प्रस्तुत शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण–विधि, शिक्षक, गुरु–शिष्य सम्बन्ध, जन शिक्षा के सम्बन्ध में दिये गये विचारों तक ही परिसीमित है।

शोध विधि एवं प्रक्रिया

वर्तमान अध्ययन मूल रूप से पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं जय प्रकाश नारायण के ग्रन्थों, लेखों तथा अन्य स्रोतों के आधार पर उनके शिक्षा दर्शन को सुव्यवस्थित करने और उनके दर्शन के आधार पर शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्य तथा मूल्य और शिक्षण पद्धतियों आदि की मीमांसा प्रस्तुत करने हेतु नियोजित किया है।

समस्या कथन

"पंडित जवाहरलाल नेहरू एवं जयप्रकाश नारायण के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन एवं वर्तमान समय में प्रासंगिकता।"

शोध विधि का चयन

ऐतिहासिक अनुसंधान का सबसे बडा गुण वर्तमान पर प्रकाश डालने की क्षमता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति को प्रकाशित करने के लिए प्रस्तुत शोध में ऐतिहासिक विधि को अपनाया गया है। इसके अन्तर्गत पंडित नेहरू एवं जय प्रकाश नारायण की शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है। ऐतिहासिक अनुसंधान विधि का नेतृत्व शिक्षा के क्षेत्र में इसलिए है कि इसके द्वारा ही आज प्रचलित शैक्षिक परिपाटियों का उद्‌गम कैसे हुआ? किसी उच्च कोटि की शैक्षिक संस्था ने विकास कैसे किया? विगत में अपनायी गयी बहुत सी शैक्षिक नीतियों के क्या परिणाम रहे? ये महत्वपूर्ण प्रश्न है और उनका प्रति उत्तर ऐतिहासिक अनुसंधान से ही मिल सकता है।

पंडित नेहरू एवं जय प्रकाश नारायण के भाषण तथा रचनाओं के आधार पर उनके शिक्षा दर्शन को सुव्यवस्थित करने और उनके दर्शन के प्रयोगात्मक आधार पर शिक्षा का स्वरूप, उद्देश्य तथा शिक्षण पद्धतियों आदि की मीमांसा प्रस्तुत करने के लिए नियोजित किया गया है। पंडित नेहरू एवं जय प्रकाश नारायण का शिक्षा दर्शन अतीत में उनके द्वारा रचित रचनाओं तथा उनके शिक्षा दर्शन पर आधारित अन्य लेखकों के ग्रन्थों, पत्र पत्रिकाओं में दृष्टिगोचर होता है। ये सभी ग्रन्थ ऐतिहासिक स्रोत से सम्बन्धित है। इन्हीं के आधार पर पंडित नेहरू एवं जय प्रकाश नारायण का शिक्षा दर्शन उभर कर सामने लाने में सहायता प्राप्त होगी।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्री जय प्रकाश नारायण द्वारा रचित विभिन्न पुस्तकों, लेखों, पत्रों तथा पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्री जय प्रकाश नारायण के बारे में विभिन्न विद्वानों एवं लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों, लेखों तथा अन्य अध्ययन सामग्री का अध्ययन किया गया है।

चूंकि समय तथा शक्ति को दृष्टिगत रखते हुए पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्री जय प्रकाश नारायण पर संपूर्ण विषय सामग्री को सम्मिलित करना संभव नहीं है। इसलिए प्रस्तुत शोध में पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्री जय प्रकाश नारायण के शैक्षिक दर्शन एवं विचारों पर आधारित चुनिंदा, पुस्तकों, पत्रों, भाषणों एवं लेखों का प्रयोग अध्ययन एवं विश्लेषण के लिए किया गया है।

तथ्यों का संकलन

इसमें निम्न साधन व स्रोतों को प्रयोग में लाया गया है–

(क) प्राथमिक स्रोत– इसके लिए पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्री जय प्रकाश नारायण कृत साहित्य का अध्ययन करना।

(ख) द्वितीय स्रोत– पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्री जय प्रकाश नारायण के जीवन दर्शन पर अन्य लेखकों द्वारा लिखे साहित्य का अध्ययन करना।

तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष

पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्री जय प्रकाश नारायण के शैक्षिक दर्शन के विवेचनात्मक अध्ययन से उभर कर आये शैक्षिक विचारों की उपयोगिता और अनुपयोगिता का मूल्यांकन किया जायेगा। विवेचना करते समय सम्मुख आये निष्कर्षो का भी उल्लेख किया गया है।

- जवाहरलाल नेहरु एवं जय प्रकाश नारायण जी सैद्धान्तिक शिक्षा के साथ–साथ व्यवहारिक शिक्षा पर भी बल दिया है।
- जवाहरलाल नेहरु एवं जय प्रकाश नारायण जी ने पुस्तकीय ज्ञान के साथ–साथ हस्त कौशल की महत्ता पर बल देते हुए हस्त कौशल को बेरोजगारी से बचने का सबसे अच्छा साधन माना है।
- जवाहरलाल नेहरु एवं जय प्रकाश नारायण जी ऐसी शिक्षा के पक्ष में थे जो मनुष्यों की वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति करे तथा बालकों में समाजवाद की भावना का विकास करे।
- जवाहरलाल नेहरु एवं जय प्रकाश नारायण जी ने स्त्री–शिक्षा पर अत्यन्त जोर दिया तथा समाज एवं राष्ट्र की उन्नति के लिए स्त्री शिक्षा को आवश्यक माना है।
- जवाहरलाल नेहरु एवं जय प्रकाश नारायण जी ने जन शिक्षा पर बल देते हुये निःशुल्क शिक्षा को महत्वपूर्ण बताया है।
- जवाहरलाल नेहरु एवं जय प्रकाश नारायण जी ने शिक्षा के माध्यम से देशभक्ति, राष्ट्रीय–प्रेम व विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास माना है।
- जवाहरलाल नेहरु एवं जय प्रकाश नारायण जी ने गुरू और शिष्यों के बीच मधुर सम्बन्धों का होना आवश्यक बताया है, और कहा है कि शिक्षक को समाज का आदर्श व्यक्तित्व वाला व्यक्ति तथा सत्य–निष्ठ आचरण करने वाला होना चाहिए।
- जवाहरलाल नेहरु एवं जय प्रकाश नारायण जी शिक्षा का एक मात्र उद्‌देश्य मानव जीवन का सर्वांगीण विकास करना माना है।

सन्दर्भ सूची

1. जय प्रकाश नारायण – सम्पूर्ण क्रान्तिः पहला पड़ाव, आखिरी मंजिल
2. ए॰एस॰ अल्तेकर – प्रचीन भारत में शिक्षा, पटना वि॰वि॰, किशोर ब्रदर्स, वाराणसी.
3. डॉ० दुबे, रमाकान्त – विश्व के कुछ महान शिक्षा शास्त्री (मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली)
4. प्रसाद, वैधनाथ – विश्व के महान शिक्षा शास्त्री
5. जय प्रकाश नारायण – वर्तमान शिक्षा प्रणाली (वक्तव्य)
6. भूपेन्द्र अबोध – लोकनायक की अन्तिम यात्रा
7. आशा प्रसाद – जिनकी अब स्मृमियां ही शेष है
8. डॉ0 लक्ष्मी नारायण लाल – जय प्रकाश जैसा मैनें देखा
9. दयाकृष्ण जोशी – जय प्रकाश दूसरी आजादी का मसीहा
10. कुसुम पटनायक – जय प्रकाश की जीवन यात्रा
11. किशन पटनायक – सम्पूर्ण क्रान्तिः सात आयाम्
12. जुगनू शारदेय – जिस दिन जयप्रकाश पर लाठियां बरसी
13. एलन और वेंडी स्कार्फ – जय प्रकाश एक जीवनी
14. मिश्र, आत्मानन्द – भारतीय शिक्षा के प्रर्वतक, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1972
15. नेहरू : (1986) विश्व इतिहास की झलक, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली।
16. नेहरू : (1988) हिन्दूस्तान की कहानी, प्रकाशक यशपाल जैन, मन्त्री, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली।
17. नेहरू : जवाहर लाल नेहरू बाडमय खण्ड 1 से 11 तक

18. नेहरू : राजनीतिक जीवन चरित्र, लेखक माइकेल ब्रीचर, अनुवादक डॉ0 हरिवंश राय बच्चन।
19. नेहरू : मेरी कहानी, अलाइड पब्लिशर्स प्राईवेट लिमिटेड, बम्बई।
20. (1958) 'ए बंच आफ ओल्ड लेटर्स' एशिया पब्लिशिंग हाऊस, बम्बई।
21. (1959) 'इण्डिया टूडे एण्ड टुमारो' आजाद मैमोरियल लेक्चर्स, इण्डियन कॉसिल ऑफ क्लचरल रिलेशन्स, नई दिल्ली।
22. नेहरू जवाहर लाल (1962) 'एन आटोबायोग्राफी' विद यूसिंग्स ऑल इण्डिया, नई दिल्ली अलाइड, पब्लिशर्स, पब्लिशर्स प्रा0 लि0 दिल्ली।